International Journal of Educational Research and Development
www.allinnovationjournal.com
Online ISSN: 2664-7095, Print ISSN: 2664-7087
Received: 02-09-2025, Accepted: 01-10-2025, Published: 16-10-2025
Volume 7, Issue 4, 2025, Page No. 5-6

मूक बधिर बालकों की शैक्षणिक चुनौतियों का अध्ययन

डॉ. पारुल मलिक[1], सपना[2]

[1] असिसटेंट प्राफेसेर एवं सुपरवाइजर, शिक्षाशास्त्र विभाग, शहीद मंगल पांडे गर्ल्स पी जी कॉलजे, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

[2] रिसर्च स्कॉलर, शिक्षा शास्त्र विभाग, शहीद मंगल पांडे गर्ल्स पी जी कॉलेज, चौधरी चरण सिंह यूनिवर्सिटी, मेरठ, उत्तर प्रदेश, भारत

सारश

समाज में कई प्रकार के बालक मौजूद है। कुछ बालक सामान्य तथा कुछ उनसे अलग हाते हैं, जिन्हें विशिष्ट बालकों की संज्ञा दी जाती है। विशिष्ट बालक कोशी उनकी विशेषता के अनुरूप संज्ञा दी जाती है, इनमें जो बालक पर्णू रूप से बोल तथा सुन नहीं सकते उन्हें मूक बधिर बालकोंकी संज्ञा दी जाती है। मूक बधिर बालको पर उनकी दिव्यागं ता का प्रभाव उनके पूरे विकास एवं सामंजस्य पर पड़ता है। मूक बधिरता उनकी सभी प्रकार के संप्रेषण जैसे समझना, बोलना, पढ़ना, लिखना आदि को प्रभावित करता है, जिससे उन्हें शिक्षा से संबंधी अनेक चुनौतियों का सामना करना पड़ता है।

मूल शब्दः मुक बधिर, सप्रेंषण, विशिष्ट, सामजंस्य, दिव्यागंता

प्रस्तावना

शिक्षा किसी राष्ट्र की समृद्धि तथा विकास में महत्वर्पूण स्थान रखती है। शिक्षा ही राष्ट्र में रहने वाले नागरिकों की उन्नति की घोतक मानी जाती है। शिक्षा के द्वारा ही मनुष्य के प्रत्येक पक्ष को विकास होता है। समाज में शिक्षा प्रदान करने के लिए स्कूल एक औपचारिक साधन है, जो सामान्य तथा विशिष्ट हर तरह की विद्यार्थियों को शिक्षा प्रदान करते हैं। विशिष्ट विद्यार्थी वह बालक है, जो सामान्य बालको से विशिष्ट आवश्यकता रखता है। पहले समय में लोग मानते थे कि यह बालक शिक्षा प्राप्त नही कर सकते है, किंतु जैसे–जैसे शिक्षा की प्रक्रिया में बदलाव आया उसने समाज में परिवर्तन किया तथा विशिष्ट बालकों की शिक्षा पर ध्यान दिया जानेलगा। विशिष्ट बालकों की शिक्षा प्रायः सामान्य विद्यार्थियों के साथ सामान्य विद्यालयों में नहीं होती। उनके लिए विशेष विद्यालयों की स्थापना की जाती है, किंतु आज के समय में यह प्रयास किए जाते हैं कि विशिष्ट बालक तथा सामान्य बालक एक ही छत के नीचे शिक्षा ग्रहण करें। सामान्य विद्यालयों के अवलोकन से यह स्पष्ट हो रहा है कि सामान्य विद्यालयों में विशिष्ट तथा विशेष रूप से दिवयांग छात्रों की संख्या कम रह जाती है। यू0 डी0 आई0 एस0 ई0 (2016–17) से प्राप्त आंकड़ों के अनुसार प्राथमिक स्तर से उच्च माध्यमिक स्तर तक जाते–जाते दिवयागं छात्रों की संख्या 1.10ः से 0.25ः रह गई जो कि अत्यतं गंभीर स्थिति है। राष्ट्रीय शिक्षा नीति–2020 के अध्याय छः में कहा गया है कि यह नीति विशेष आवश्यकता वाले (सी डब्ल्यू एस एन) या दिव्यांगों को किसी अन्य बच्चे के सामान गुणवत्तापर्णू शिक्षा प्राप्त करने के समान अवसर प्रदान करने के लिए सक्षम तंत्र बनाने के महत्व को भी पहचानती है।

विशिष्ट बालक

सृष्टि को बनाने वाले सृष्टा ने इस सृष्टि में जड़ चेतन के रूप में जो भी बनाया, उसमें विभिन्नता पाई जाती है। इस धरा पर अलग अलग प्रकार के पेड़, पौधे, चट्टानें, मिट्टी, कीट–पतंगे, पशु–पक्षी एवं उसमें सबसे सुंदर रचना मानव दिखाई पड़ते हैं। धरती पर जितनेंाी मानव हैं वे सभी अपना–अपना निज स्वरूप तथा व्यक्तिगत विभिन्नता रखते हैं। कोई लबां हाता है तो कोई नाटा, कोई गोरा हाता है तो कोई काला। सभी की योग्यताऐं अलग–अलग है काई किसान बनने की योग्यता रखता है तो कोई वैज्ञानिक, काई अध्यापक की योग्यता रखता है, तो कोइ ईंजीनियर। बहुत सारे भदे तथा विभिन्नताएँ व्यक्तियों मे भारी पड़ी है। इसी के कारण कोई व्यक्ति दूसरों की तरह नहीं होता। व्यक्ति सामान्य रूप से समान दिखाई देते हुए ही समान नहीं हाते। उनमें व्यक्तिगत विभिन्नताएँ पाई जाती है। इन विभिन्नताओं का आधार वातावरण तथा वंशानुक्रम से मिले हुए गुण हाते हैं। समाज में अनेक प्रकार से बालक रहते हैं। इनमें से अधिकतर बालक सामान्य होते हैं तथा इनके अलावा कुछ बालक ऐसे होते हैं। जिनकी अपनी कुछ अलग शारीरिक, मानसिक संवेगात्मक, सामाजिक तथा नैतिक विशेषताएं होती हैं। कुछ बालक मानसिक योग्यताओं और शक्तियों को लेकर बुद्धि तथा विवेक के बहुत ही ऊंचे स्तर पर विराजमान होते हैं, तो कछु बालकों की मानसिक योग्यता तथा शक्तियां जरूरत से ज्यादा कम होती है। किसी बालक कीनेन्द्रियाँ तथा कर्मेन्द्रियां सही प्रकार से कार्य करती है तो किसी की दाषेयुक्त होती है, जिसके कारण बालक का विकास तथा दैनिक कार्यशीलता प्रभावित होती है। इन बालकों की जीवन में पग–पग पर बाधाओं तथा समायोजन संबंधी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। विशिष्ट बालकों को अपनी यारेग्यता तथा शक्तियां का सही उपयोग के लिए तथा अपने आप को समायोजित करने के लिए विशेष शिक्षा–दीक्षा एवं देखभाल की आवश्यकता होती है। इस प्रकार विशिष्ट बालक एक ऐसा बालक होता है जिससे कुछ ऐसे विशेष गुण विशेष गुण या लक्षण होते हैं। जो सामान्य बालकों में नहीं पाए जाते हैं। इन्हीं विशेषताओं के कारण वह दूसरों का ध्यान अपनी ओर खीचंता है। इन बालकों की समस्याएं भी विशिष्ट प्रकार की हाते है। शक्रो तथा क्रो ने विशिष्ट शब्द को स्पष्ट करते हुए बताया है कि ''विशेष प्रकार या विशिष्ट शब्द किसी ऐसे गुण या उस गुण को धारण करने वाले व्यक्ति के लिए उस समय प्रयागे में लाया जाता है, जबकि व्यक्ति उस गुण विशेष को धारण करते हुए अन्य सामान्य व्यक्तियों से इतना अधिक असामान्य प्रतीत हाता है कि उस गुण विशेष के कारण अपने साथियों से विशिष्ट ध्यान की मागं करें अथवा उसे प्राप्त करें और साथ ही उसकी व्यवहार की क्रियाए ं तथा अनुक्रियाये भी प्रभावित हो।''

टेलफोर्ड और सारे ने विशिष्ट बालकों के संबंध में कहा ''विशिष्ट बालक शब्दावली का प्रयोग उन बालकों के लिए करते हैं,जो सामान्य बालकों से शारीरिक, मानसिक, संवेदनात्मक या सामाजिक विशेषताओं में इतने अधिक भिन्न होते हैं कि उन्हें अपनी क्षमता के अधिकतम विकास हेतु विशेष सामाजिक और

शैक्षिक सेवाओं की आवश्यकता पड़ती है''। मूक बधिरता मूक बधिरता शारीरिक विकलांगता की श्रेणी में आती है। मूक तथा बधिरता दो भिन्न शारीरिक दोष है। अनेक अध्ययन में स्पष्ट हो चुका है कि जो बालक पूर्णतः सुन नहीं सकते, वे बाले नहीं पाते हैं। इस प्रकार स्पष्ट है कि श्रवण में असमर्थ होने के कारण वाक् में असमर्थ व्यक्ति को मूक बधिर कहा जाता है। ऐसे बालक को विशेष प्रकार के प्रशिक्षण की आवश्यकता होती है, जिससे इन्हें स्वय ंका कार्य करने समझने में सहायता मिलती है।

एस.एस. माथुर (2001) ने कहा ''मुख्य रूप से बधिर शब्द ऐसे व्यक्ति के लिए प्रयागे किया जाता है जिससे कभी कोई चीज सुनी ही न हो उसने अपने बोलने से पहले ही अपनी श्रवण शक्ति को खो दिया हो और साथ ही बोलने की शक्ति नष्ट होगई हो।''

शैक्षिक चुनौतियां मूक बधिर विद्यार्थियों के समक्ष अनेक चुनौतियां होती हैं

1. शिक्षकों की कमी मूक बधिर विद्यार्थियों को सही ढंग से पढ़ने के लिए सांकेतिकी भाषा में पारंगत शिक्षकों की कमी इन विद्यार्थियों की शिक्षा के समक्ष एक बड़ी चुनौती है।
2. भाषा की बाधा मौखिकी भाषा और साकेतिक के बीच अतंर के कारण मूक बधिर विद्यार्थियों को दूसरे लागों के साथ संवाद में बाधा आती है तथा सीखने में कठिनाई होती है, जिसके कारण इन बालकों को शिक्षा प्राप्त करने में चुनौती का सामना करना पड़ता है।
3. अभिभावक की शिक्षा का स्तर अभिभावकों की शिक्षा का स्तर भी मूक बधिर बच्चों की शिक्षा की समस्या में एक महत्वपर्णू चुनौती है। वे अभिभावक जिनकी शिक्षा का स्तर उच्च होता है वह अपने बच्चों की शिक्षा में प्रत्यक्ष–अप्रत्यक्ष रूप से शामिल रहते हैं तथा बच्चों की शिक्षा में सहायता प्रदान करते हैं। अपेक्षाकृत उन अभिभावको के जिनका शिक्षा का स्तर उच्च नहीं है।
4. पारिवारिक वातावरण पारिवारिक वातावरण जैसे परिवार की आर्थिक स्थिति, परिवार की सामाजिक स्थिति, परिवार में शोर ,घरलेू झगड़े, इत्यादि मकू बधिर बालकोंके समक्ष एक चुनौती होती है, जिसका प्रभाव उनके संपर्णू व्यक्तित्व तथा उनकी शिक्षा पर पड़ता है।
5. हीनीाावना मूक बधिर बालकों में अधिकतर हीनीाावना विद्यमान हो जाती है जिसके कारण यह सामान्य बालको से दूरी बनाकर रखते हैं तथा अपने ही तरह के बालकों में रहना पसंद करते है। सामान्य बालको से समायोजन में कठिनाई भी उनकी शिक्षा को प्रभावित करती है तथा उनकी शिक्षा में एक बड़ी बाधा पैदा करती है।
6. शिक्षण विधियां मूक बधिर बालकों को पढ़ाने के लिए विशेष शिक्षण विधियां की आवश्यकता होती है। यदि शिक्षक इन बालकों के अनुरूप शिक्षण विधियां मेंअनुकलून नही ंकरते है, तो मूक बधिर बालको को सिखाने में कठिनाई का अनुभव होता है।
7. मूक बधिर बालकों के लिए शैक्षिक सामग्री मूक बधिर बालको को अक्सर शैक्षणिक सामग्री तक पहंचु ने में कठिनाई होती हेयदि वह सामग्री सांकेतिकी भाषा में नहीं है तो कठिनाई और बढ़ जाती है।

पाठयक्रम

पाठयक्रम की अधिकता के कारण भी कठिनाई होती है। यह उनकी एक शैक्षणिक चुनौती है जो कि उनके सीखने को प्रभावित करती है।

समाधान

1. मूक बधिर विद्यार्थियों के शिक्षण के दौरान सांकेतिकी भाषा का प्रयागे करना चाहिए। सांकेतिकी भाषा के प्रयागे से छात्रों का अधिगम सुगम हो सकेगा तथा इन विद्यार्थियों की शिक्षण की चुनौतियों का स्थाई समाधानी भी हो सकेगा।
2. विद्यार्थियों के सामने बैठकर ही उन्हें सांकेतिक निर्देश दिए जाने चाहिए। शिक्षक को सांकेतिकी भाषा में निर्देश देते समय छात्रों के सामने तो होना चाहिए तथा उन्हें लिखित नोटिस देने चाहिए। लिखित नोटिस देने से विद्यार्थी पाठ को अच्छे प्रकार से समझ सकेगा।
3. शिक्षण के समय प्रौद्योगिकी का इस्तेमाल करने से मूक बधिर छात्रों को अधिगम में सहायता मिलती है तथा शिक्षक के द्वारा पढ़ाई जाने वाली पाठ को छात्र नवीन तकनीकी की सहायता से सुगमता से सीख लेते हैं।
4. प्रशिक्षित शिक्षकों के द्वारा इन बालकों को पढ़ाया जाना चाहिए सांकेतिकी भाषा, विशेष शिक्षण विधियां तथा समावेशी शिक्षा के विषय में जानकारी शिक्षिक को हानेी चाहिए।
5. समावेशी शिक्षा सामान्य तथा मूक बधिर बालको ंको सामान्य कक्षाओं म ेंसाथ पढने् का अवसर प्रदान करती है जो कि इन बालकों की शैक्षिक उपलब्धि के साथ–साथ सामाजिक, भावनात्मक विकास के लिए भी महत्वपूर्ण है।
6. परिवार तथा समाज के समर्थन कीशी इन बालकों को बहुत अधिक आवश्यकता होती है। माता पिता को भी सांकेतिकी भाषा सीखने की आवश्यकता है जिससे कि मूक बधिर बालक की शिक्षा में सक्रिय रूप भागीदारी दी जा सके तथा बालक की शैक्षणिक चुनौती कम हो सके।
7. पाठ्यक्रम को कम करकी इन छात्रों की शैक्षणिक चुनौतियों को काम किया जा सकता है। अत्यधिक बड़ा पाठ्यक्रम सीखने में इन बालकों को कहीं व्यावहारिक समस्याएं आती हैं।

निष्कर्ष

मूक बधिर बालकों को अनेक समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन बालकों कोपरिवार, विद्यालय तथा समाज में अनेकों क्रिया कलाप करने में समस्याएं होती हैं तथा जीवन के प्रत्यके क्षेत्र में अनेकों चुनौतियों का सामना करना पडत़ा है। शक्षैणिक क्षेत्र में परिवार तथा समाज की जागरूकता, प्रशिक्षित शिक्षक, नवीन तकनीकी, सांकेतिकी भाषा आदि के माध्यम से इन बालकों की समस्याओं का निदान किया जा सकता है ताकि यह बालक भी समाज व राष्ट्र की मुख्य धारा से जुड़ सके।

संदर्भ ग्रंथ

1. मगं ल, एस.पी. (2016) एजुकेटिंग एक्सप्ेशनल चिल्ड्रन इन इट्रोडक्शन टू स्पेशल एजुकेशन ,नई दिल्ली, पी.एच. ई. लर्निंग प्राइवेट लिमिटेड
2. पाल, सितारा एवीाालो वी. (2013) संगम श्रवण एवं वाणी प्रबंधन ,नवीन प्रकाशन, अहमदाबाद
3. कुमार ,हरिओम ,सिंदे,धीरज (2023) विद्यार्थियों के समायोजन शैक्षिक उपलब्धि एवं अध्ययन संबंधी समस्याओं का अध्ययन राजस्थान के संदर्भ में। Vol-9,Issue-3, 2023 IJARIIE-ISSN(O)-2395-4396https://ijariie.com
4. सरोला, मीना, शर्मा, अन्नपूर्णा (2018) मकू बधिर विद्यार्थियों की अध्ययन संबंधी समस्याओं का लिंगीादे तथा विद्यालय के प्रकृति के संदर्भ में अध्ययन। Vol-12,Issue-2,september-2018 ISSN:2349-266 www.researchguru.net
5. दुबे, अजय कुमार, दीपिका (2022) मूक बधिर बालक व बालिकाओं की शैक्षिक समायाजे न का तुलनात्मक अध्ययन। Vol-11, Issue-12, December 2022, e-ISSN-2319-8753 p-ISSN:2347-6710 www.ijirset.com